# झारखण्ड की महिलाओं के विकास में आर्य समाज की भूमिका : एक ऐतिहासिक अध्ययन (1894 ई. से 2020 ई.)

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप की रूपरेखा

**(सामाजिक विज्ञान संकाय)**

**विश्वविद्यालय इतिहास विभाग**

**राँची विश्वविद्यालय, राँची**

**शोध निर्देशकः**

**डॉ. राज कुमार**

सहायक प्राध्यापक

विश्वविद्यालय इतिहास विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

**शोधार्थीः**

**देविका चौधरी**

यू.जी.सी. नेट उत्तीर्ण

विश्वविद्यालय इतिहास विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

# झारखण्ड की महिलाओं के विकास में आर्य समाज की भूमिका : एक ऐतिहासिक अध्ययन (1894 ई. से 2020 ई.)

## 1. विषय का परिचय

भारत ; पुरातन काल से ही विश्व जगत को धर्म , संस्कृति एवं सभ्यता का पाठ पढ़ाता रहा है। वैदिक काल भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण एवं प्राचीन कालखण्ड है जिसमें संस्कृति ,सभ्यता, धर्म एवं समाज की नींव रखी गई थी। इस युग की सामाजिक , धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि के मुख्य स्त्रोत ऋग्वेद , सामवेद, यजुर्वेद , अथर्ववेद इत्यादि हैं। वैदिक काल में महिलाओं की दशा काफी अच्छी थी, उन्हें पर्याप्त स्वतंत्रता थी, उनकी शिक्षा–दीक्षा की समुचित व्यवस्था थी। लोपामुद्रा , घोषा, अपाला, विश्ववारा आदि विदुषी स्त्रियों ने ऋग्वेद की बहुत–सी ऋचाओं की रचना की । भारत भूमि को यह गौरव प्राप्त है कि यहाँ समय–समय पर अनेकों ऐसी महान विभूतियों ने जन्म लिया, जिन्होंने अपना सर्वस्व मानवता के उद्धार एवं विश्व शांति के लिए समर्पित कर दिया। 19 वीं सदी के महान समाज सुधारकों में से एक स्वामी दयानंद सरस्वती ने धार्मिक , सांस्कृतिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण के आंदोलन का सूत्रपात करके जहाँ प्राचीन मान्यताओं को वैज्ञानिक और व्यावहारिक आधार प्रदान किया, वहाँ अनेकों सामाजिक कुरीतियों के साथ भी संघर्ष करते रहे। इनके द्वारा एक सुधारवादी हिन्दू संगठन आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल 1875 ई. को तब की गई, जब भारत; विदेशी साम्राज्यवाद के लौह शिकंजे में कसा हुआ था। चूंकि आर्य समाज का आदर्श वाक्य है **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** अर्थात् विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाते चलो। इसी क्रम में इस संगठन ने सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध आंदोलन का शंखनाद किया जैसे– जातिवादी जड़मूलक समाज को तोड़ना, बाल विवाह का उन्मूलन, विधवा विवाह का समर्थन , महिलाओं के लिए समान अधिकार , निम्न जातियों को सामाजिक अधिकार प्राप्त होना इत्यादि।

स्वामी दयानंद सरस्वती आर्य समाज आंदोलन को समाज कल्याणार्थ हेतु देश भर में प्रसारित करना चाहते थे। इस संगठन ने विगत् कई दशकों से मानव हित के लिए विशेषकर महिलाओं के संदर्भ में अमूल्य योगदान दिया है। आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाएँ , डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल , आर्य कन्या पाठशाला, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय इत्यादि स्वामी दयानंद के सच्चे स्मारक हैं। पूर्व में बिहार राज्य का हिस्सा रहे वर्तमान झारखण्ड में भी इस आंदोलन का प्रचार–प्रसार हुआ , जोकि भारत के पूर्वी भाग में अवस्थित एक जनजातीय बाहुल्य राज्य है। अप्रैल , 1894 ई. में झारखण्ड के राँची में बालकृष्ण सहाय ने आर्य समाज की स्थापना की । इस महत्वपूर्ण घटना के बाद आर्य समाज की विभिन्न शाखाएँ झारखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में खुलने लगी। आर्य समाज ने इस क्षेत्र के सामाजिक , शैक्षिक , सांस्कृतिक–आध्यात्मिक , आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस संगठन ने विभिन्न आर्थिक–सामाजिक पृष्ठभूमि वाले छात्र–छात्राओं को विशेषकर महिलाओं के संबंध में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से स्कूलों, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों सहित कई शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की है, यहाँ विषय के ज्ञान के साथ–साथ नैतिकता , अनुशासन एवं सामाजिक सेवा के मूल्यों पर भी बल दिया जाता है ताकि उनका समग्र विकास हो सके।

## 1.1 साहित्य समीक्षा

चूंकि आर्य समाज का अभ्युदय ही वैदिक विचारधारा से हुआ है।वैदिक साहित्यों में शोध विषय से संबंधित अनेकानेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। अध्ययन किए गए साहित्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

- दयानंद सरस्वती द्वारा लिखित ***सत्यार्थ प्रकाश*** आर्य समाज का प्रमुख ग्रंथ है, जिसका उद्देश्य आर्य समाज के सिद्धांतों एवं उद्देश्यों का प्रचार–प्रसार करना था। इस पुस्तक में महिलाओं के विकास पर विशेष चर्चा नहीं की गयी है।

- सत्यकेतु विद्यालंकार, हरिदत्त विद्यालंकार एवं भवानी लाल भारतीय द्वारा लिखित पुस्तक ***आर्य समाज का इतिहास*** में भी आर्य समाज का विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार का वर्णन किया गया है, परन्तु जितनी चर्चा महिलाओं पर होना चाहिए, उसका अभाव है।
- इंद्र विद्यावाचस्पति की रचना ***आर्य समाज का इतिहास***, यह पुस्तक आर्य समाज के जन्म एवं विकास की कहानी बताती है। इस समाज ने भारतीय समाज को कैसे बदला , इसके सामने क्या चुनौतियाँ आई, उन चुनौतियों को कैसे पार किया गया का वर्णन भी किया गया है, लेकिन महिलाओं के विकास संबंधी तथ्यों का वर्णन नहीं किया गया है।
- बी.एल.फड़िया द्वारा लिखित पुस्तक ***आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन*** स्वामी दयानंद के राजनीतिक विचार , सामाजिक विचार, शिक्षा संबंधी विचार को दर्शाती है साथ ही भारतीय चिंतन को स्वामी दयानंद के योगदान का मूल्यांकन भी करती है। इस पुस्तक में भी आर्य समाज द्वारा महिलाओं के संदर्भ में किए गए कार्यों का उचित वर्णन प्रस्तुत नहीं किया गया है।
- पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय द्वारा रचित पुस्तक ***आर्य समाज*** में आर्य समाज के संस्थापक की जीवनी , सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या , कार्यों का विवरण आदि दर्शाया गया है, परंतु आर्य समाज द्वारा नारियों के उत्थान में किए गए प्रयासों का यथोचित वर्णन प्रस्तुत नहीं किया गया है।
- बी. वीरोत्तम ने अपनी पुस्तक ***झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति*** में झारखण्ड के इतिहास , भौगोलिक स्थिति , शैक्षणिक विकास, जनजातीय रूपान्तरण इत्यादि का विधिवत वर्णन किया है, लेकिन स्त्रियों की दशा पर जितनी चर्चा होना चाहिए , उसका इस पुस्तक में अभाव है।
- रेणु दीवान द्वारा लिखित ग्रंथ ***झारखण्ड की महिलाएँ*** में झारखण्ड की महिलाओं का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान तथा उनकी दशा एवं दिशा का सारगर्भित वर्णन किया गया है परन्तु उनके सर्वांगीण विकास पर विशेष चर्चा का अभाव है ।

## 1.2 शोध रिक्ति

उपरोक्त साहित्य की समीक्षा से हमें ज्ञात होता है कि स्वामी दयानंद एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की विस्तृत जानकारी हेतु विभिन्न रचनाएँ उपल्बध हैं। इस संगठन से जुड़े विभिन्न कार्यों के संबंध में हमें यत्र–तत्र वर्णन मिलता है, परन्तु वृहद रूप में किसी क्षेत्र विषयांतर्गत आर्य समाज द्वारा महिलाओं के विकास के लिए योगदान के अध्ययन का अभाव है विशेषकर जनजातीय बाहुल्य झारखण्ड जैसे नवनिर्मित राज्य में इसका अध्ययन समीचीन है।

अतः आर्य समाज के योगदान को व्यापक रूप से प्रस्तुत करने एवं झारखण्ड की महिलाओं के संपूर्ण विकास में इसकी व्यावहारिक उपयोगिता की जानकारी देने के लिए इन शोध अंतरालों को संबोधित करना आवश्यक है। इस क्षेत्र में महिलाओं के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने हेतु आर्य समाज द्वारा किए जा रहे प्रयासों का विस्तृत अध्ययन कर इस शोध अंतराल को भरा जा सकता है।

## 1.3 शोध की समस्या

आर्य समाज वेदों के सिद्धांतो के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने तथा विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य , धर्म एवं महिलाओं के अधिकारों को सुरक्षित रखने का प्रयास करता है। प्रस्तावित शोध की समस्या झारखण्ड की महिलाओं के धार्मिक , आध्यात्मिक , सांस्कृतिक , सामाजिक , शैक्षिक , आर्थिक विकास में आर्य समाज के व्यापक एवं दीर्घकालिक परिणामों की जांच करना है। साथ ही संबंधित शिक्षण संस्थानों का प्रभाव , बाल विवाह , दहेज प्रथा, विधवा विवाह , लैंगिक असमानता जैसे सामाजिक मुद्दे , आर्य समाज के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक अभियानों का इस राज्य की स्थानीय महिलाओं पर पड़ रहे प्रभाव का अध्ययन एवं सभी अनछूए पहलुओं को प्रस्तावित शोध कार्य के माध्यम से समझने का प्रयास किया जायेगा।

## 1.4 शोध के उद्देश्य

प्रत्येक शोध कार्य कुछ निश्चित उद्देश्यों से प्रेरित होते हैं। यह उद्देश्य ही कार्यों को एक निश्चित दिशा प्रदान करते हैं। प्रस्तावित शोध प्रबंध निम्नलिखित उद्देश्यों से अभिप्रेरित हैं–

- झारखण्ड में आर्य समाज के प्रचार एवं प्रभाव का वर्णन करना।
- इस क्षेत्र में नारी उत्थान में आई प्रारंभिक चुनौतियों का पता लगाना।
- आर्य समाज द्वारा संचालित शैक्षणिक पहलों का महिला वर्ग पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
- आर्य समाज द्वारा संचालित आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
- आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में आर्य समाज द्वारा किए गए प्रयासों का आंकलन करना।

## 1.5 शोध की परिकल्पना

- जनजातीय बाहुल्य प्रदेश झारखण्ड में आर्य समाज का प्रचार–प्रसार यहाँ के स्थानीय समुदाय एवं महिलाओं के कल्याण एवं विकास हेतु किया गया ।
- आर्य समाज द्वारा नारी उत्थान में आई आरंभिक कठिनाईयों का समाधान किया गया ।
- शैक्षिक पहल ने यहाँ की महिलाओं की शैक्षणिक उत्कृष्टता और नैतिक विकास में योगदान दिया है।
- विभिन्न आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने महिलाओं में आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक जागृति को बढ़ावा दिया है।
- आर्य समाज के आर्थिक तथा सामाजिक विकास कार्यक्रमों ने महिलाओं को प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाया है।

## 2. शोध प्रारूप :–

### 2.1 शोध विधि

ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से तथ्य संकलित किए जाएंगे। संख्यात्मक एवं गुणात्मक डाटा का विश्लेषण गहन रूप से किया जाएगा। तथ्यों के एकत्रीकरण हेतु आर्य समाज संगठन संबंधी ऐतिहासिक दस्तावेजों , प्रकाशनों , वार्षिक रिपोर्ट , अभिलेखागार स्त्रोतों , पुस्तकालय, समाचार पत्र , पत्रिकाओं आदि का सहारा लिया जाएगा। आर्य समाज के मंदिरों , आश्रमों के वरिष्ठ सदस्यों , शिक्षण संस्थानों के प्रधानाचार्य , शिक्षकों , छात्र–छात्राओं तथा स्थानीय महिलाओं के साथ साक्षात्कार किया जाएगा। सर्वेक्षण के

माध्यम से उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि एवं मिश्रित विधियों का प्रयोग करते हुए महिलाओं का एक समूह तैयार कर कार्यक्रमों की सफलता और उनकी प्रभावकारिता का मूल्यांकन किया जाएगा। विभिन्न दस्तावेजों , साक्षात्कारों , सर्वेक्षण से एकत्र की गई जानकारी का विश्लेषण कर आर्य समाज के विकास के महत्वपूर्ण घटनाओं , परिवर्तनों तथा महिलाओं में सकारात्मक बदलावों को सुनिश्चित करना शामिल है।

## 2.2 आंकड़ा संग्रह हेतु उपकरण एवं तकनीक

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अंतर्गत प्रमुख घटनाओं की समयावधि की पहचान करते हुए झारखण्ड में संचालित विभिन्न आर्य समाज संस्थानों , मंदिर , आश्रम , शिक्षण–संस्थान आदि के कालानुक्रमिक विकास का आंकलन करना शामिल है। आर्य समाज द्वारा नारियों के चहुंमुखी विकास हेतु किये जा रहे योगदान के संदर्भ में संगठन के पूर्व एवं वर्तमान सदस्यों के साथ साक्षात्कार कर ऐसे तथ्यों पर अंतर्दृष्टि मिल सकती है जो हमें लिखित स्त्रोतों में उपलब्ध नहीं होते । आर्य समाज के रिपोर्ट , रिकॉर्ड्स, प्रकाशन तथा स्थानीय दस्तावेजों का विश्लेषण किया जाएगा। फोकस ग्रुप डिस्कशन कर विभिन्न समुदायों की महिलाओं के अनुभवों का संकलन किया जाएगा। प्रश्नावली का उपयोग कर डाटा एकत्रित किए जाएंगे। इसके साथ ही विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेज , पुस्तकें आदि डिजिटल वेब पर उपलब्ध हैं संग्रहित डाटा के विश्लेषण हेतु डाटा एनालिसिस सॉफ्टवेयर का भी उपयोग किया जाएगा।

## 2.3 आंकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तावित अनुसंधान में सटीक एवं सार्थक आख्यानों के निर्माण हेतु तथ्यों का विश्लेषण महत्वपूर्ण है। इस हेतु संग्रह किए गए विभिन्न प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों की वैधता तथा विश्वसनीयता की जांच की जाएगी। मात्रात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत सर्वेक्षण , साक्षात्कार आदि से प्राप्त मात्रात्मक आंकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा। इससे हमें झारखण्ड की महिलाओं के संदर्भ में आर्य समाज के प्रभाव के सामान्य रूझान की जानकारी मिलेगी। विभिन्न दस्तावेजों , रिपोर्ट एवं प्रकाशित साहित्यों का विश्लेषण किया जाएगा ताकि इन क्षेत्रों में महिलाओं की उन्नति हेतु आर्य समाज द्वारा किये जा रहे कार्यों एवं उनके परिणामों की गहरी समझ प्राप्त हो सके। अंततः आर्य समाज द्वारा किये

जा रहे अमूल्य योगदान के व्यापक समझ बनाने हेतु विभिन्न डाटा विश्लेषण विधियों से निष्कर्ष का संश्लेषण करना शामिल है।

## 3. शोध कार्य का महत्व

प्रस्तावित शोध कार्य की महत्ता इसलिए अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि यह जनजातीय बाहुल्य राज्य झारखण्ड की महिलाओं के विकास के विभिन्न पहलुओं पर आर्य समाज के प्रभाव को समझने का प्रयास करता है। यह शोध न केवल आर्य समाज के सुधारवादी आंदोलनों के प्रभाव का मूल्यांकन करेगा अपितु महिलाओं की शैक्षिक , सामाजिक , सांस्कृतिक , आध्यात्मिक, आर्थिक भागीदारी में आए परिवर्तनों की भी जांच करेगा। इस शोध का निष्कर्ष सरकार तथा विभिन्न गैर सरकारी संगठनों को नीतियों एवं कार्यक्रमों को डिजाईन और कार्यान्वित करने में मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह शोध स्थानीय समुदायों में जागरूकता बढ़ाने तथा उन्हें सामाजिक सुधार कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी देने हेतु प्रेरित करता है।

## 4. वर्तमान समय में विषय की उपादेयता एवं आवश्यकता

इस शोध कार्य का अध्ययन सामुदायिक विकास मॉडल प्रस्तुत करता है जो महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु प्रभावी रणनीति बनाने में सहायक है। वर्तमान समय में हमारा समाज लैंगिक, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक असमानताओं जैसे गंभीर मुद्दों से जूझ रहा है जिसका विपरीत प्रभाव निःसंदेह महिला वर्ग पर अधिक देखा जा सकता है। प्रस्तावित शोध कार्य में आर्य समाज द्वारा किए जा रहे सुधार प्रयासों का अध्ययन करने से यह समझने में मदद मिलेगी कि वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में और क्या सुधार किये जा सकते हैं। आर्य समाज की स्थापना के समय से ही इस समाज ने निरंतर विभिन्न सुधारों को बढ़ावा दिया है। इसी कार्यक्रम को बढ़ाने, प्रोत्साहित करने एवं वर्तमान समय में महिलाओं के प्रति सकारात्मक बदलाव लाने की और अधिक आवश्यकता है।

## 5. वर्तमान ज्ञान में योगदान

संदर्भित शोध विषय विभिन्न प्रकार से वर्तमान ज्ञान में योगदान करने की क्षमता रखता है। यह व्यापक विश्लेषण कर स्थानीय समुदाय और शिक्षा, सामाजिक कल्याण एवं सांस्कृतिक विकास, आध्यात्मिक विकास और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मौजूदा अंतराल को भर सकता है। इसके अलावा आर्य समाज संबंधित संगठनों, गुरुकुल, शिक्षण संस्थानों के सामने आने वाली चुनौतियों तथा समय के साथ सामंजस्यता बैठाने हेतु इसकी रणनीति का विवरण प्रस्तुत कर यह शोध उनके विकास कार्यों में लगे संगठनों के लिए व्यावहारिक एवं आदर्श मॉडल प्रस्तुत कर सकता है। अंततः ऐतिहासिक तथ्य और आख्यानों को संश्लेषित करके यह शोध झारखंड की महिलाओं के विकास क्रम का उदाहरण प्रस्तुत कर महिला वर्ग के संदर्भ में आर्य समाज जैसे संगठनों द्वारा निभाए जा रहे महत्वपूर्ण भूमिका की गहरी सराहना में योगदान दे सकता है।

## 6. भविष्य के लिए कार्य

सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान करने हेतु भविष्य के शोध सामुदायिक विकास दृष्टिकोण में अन्य सामाजिक सुधार आंदोलनों जैसे–ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन, गांधीवादी आंदोलनों आदि के साथ आर्य समाज की गतिविधियों का अध्ययन करने पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। स्थानीय तथा वैश्विक स्तर पर महिलाओं के सशक्तिकरण एवं समानता की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किये जा सकते हैं।

## 7. प्रस्तावित अध्याय

| | | |
|---|---|---|
| | | भूमिका |
| प्रथम अध्याय | – | ऐतिहासिक पृष्ठभूमि |
| द्वितीय अध्याय | – | नारी उत्थान में प्रारंभिक चुनौतियाँ |
| तृतीय अध्याय | – | नारी शिक्षा और आर्य समाज |
| चतुर्थ अध्याय | – | आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आर्य समाज का योगदान |
| पंचम अध्याय | – | नारी के आर्थिक–सामाजिक विकास में आर्य समाज का योगदान |

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ

परिशिष्ट

**संदर्भ**

झारखंड की महिलाओं के संदर्भ में आर्य समाज की भूमिका विषयांतर्गत गहन अध्ययन हेतु निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया जा सकता है–

**प्राथमिक स्रोत –**

- अभिलेखीय रिकॉर्ड्स
- स्थानीय अभिलेख
- मौखिक इतिहास
- समाचार–पत्र और प्रशासन
- फोटोग्राफ्स
- व्यक्तिगत डायरी एवं पत्र
- सामुदायिक अनुष्ठान एवं समारोह

**द्वितीयक स्रोत**

- ऐतिहासिक डेटाबेस
- शैक्षणिक पत्रिकाएं
- सरकारी प्रकाशन

**सन्दर्भ सूची**

1. दयानंद सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, श्री घूडमल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, राजस्थान, 2009

2. सत्यकेतु विद्यालंकार, हरिदत्त विद्यालंकार एवं भवानी लाल भारतीय, आर्य समाज का इतिहास, आर्य स्वाध्याय केन्द्र, दिल्ली, 1984
3. इन्द्र विद्यावाचस्पति, आर्य समाज का इतिहास, वैदिक प्रकाशन, 2019
4. बी.एल.फड़िया, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2013
5. पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय, आर्य समाज, नारायण स्वामी, मथुरा, 2000
6. बी. वीरोत्तम, झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2020
7. आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह, स्मारिका आर्य प्रतिनिधि सभा, विदर्भ, 1975
8. आर्य समाज, शताब्दी स्मारिका, 1894–1994, राँची
9. लाला लाजपत राय, आर्य समाज, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2017
10. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016
11. दयानंद सरस्वती, ऋग्वेद हिन्दी भाष्य, सार्वदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
12. दयानंद सरस्वती, यजुर्वेद–भाष्यम् ,वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
13. स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड, सामवेद भाष्यम्, मानव उत्थान संकल्प संस्थान, दिल्ली, 2005
14. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, अथर्ववेदभाष्यम्, मानव उत्थान संकल्प संस्थान, दिल्ली, 2005